

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 20, संपत्ति और प्रावधान, लूका 12:13-34

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, संपत्ति और प्रावधान, लूका 12:13-34।

लूका के सुसमाचार पर बिब्लिका ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

पिछले व्याख्यानों में, हमने यीशु की कुछ शिक्षाओं पर विचार किया, और पिछले सत्र के अंतिम भाग में शिष्यत्व की तैयारी के बारे में बात की गई। जैसे-जैसे हम लूका, अध्याय 5 में यीशु द्वारा शुरू की गई यात्रा को आगे बढ़ाते हैं, अध्याय 9, श्लोक 51 की ओर बढ़ते हुए, यरूशलेम की ओर बढ़ते हुए, हम गलील से यरूशलेम की ओर इस यात्रा में कुछ चीजें सामने आते हुए देखेंगे। यह उस यात्रा की कहानी है, जिस तरह से लूका ने इस वृत्तांत को इस सत्र में लाया है, मैंने इस व्यापक सत्र को आने वाले न्याय के लिए तत्परता का शीर्षक दिया है।

लेकिन इस व्याख्यान में हम जिस उप-सत्र पर विशेष रूप से विचार कर रहे हैं, वह सत्र सम्पत्ति और प्रावधान से संबंधित है। तो, चलिए जल्दी से चलते हैं और पाठ को देखना शुरू करते हैं। पाठ को पढ़ने से पहले, मैं आपको इस विषय पर सोचने के लिए एक नक्शा देना चाहूँगा जिसे मैंने राज्य में सम्पत्ति और प्रावधान कहा है।

लूका हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करने जा रहा है कि यह यीशु और भीड़ के बीच एक प्रतियोगिता थी जिसमें कोई व्यक्ति आया और बीच में बोल पड़ा, अगर आप चाहें तो बातचीत को बाधित कर दिया और विरासत के बारे में एक सवाल पूछा। ऐसा लगता है कि यह यीशु को भड़का रहा था क्योंकि यीशु, यीशु होने के नाते, इस व्यक्ति को समझ रहा था और सवाल कहाँ से आ रहा था। इसलिए, पहला भाग जिस पर हम विचार करेंगे वह विरासत का सवाल है और यीशु इस मुद्दे को कैसे संबोधित करेंगे।

हम यह भी देखेंगे कि यीशु ने किस तरह से एक दृष्टांत देकर संपत्ति के मुद्दे से निपटने का प्रयास किया, जिसे हम अक्सर धनी मूर्ख का दृष्टांत कहते हैं। उसके बाद, जैसा कि मैं पाठ पढ़ता हूँ, कृपया उस मानसिक मानचित्रण को बनाएँ जिसके बारे में यीशु तब बात करेंगे यदि यह हमारी ज़रूरतों के बारे में चिंता या चिंता का विषय है जो चीज़ों की ज़रूरत या लालसा को प्रेरित करता है, तो हमें चिंता को सही जगह पर रखने के लिए सावधान रहना चाहिए। वह दिखाता है, जैसा कि मैं जल्द ही पढ़ूँगा, कि, वास्तव में, अगर किसी के भविष्य के प्रावधान के लिए भरोसा करने की जगह है, तो शायद भरोसा करने की जगह भगवान पर भरोसा करना है, जिसके पास प्रदान करने की क्षमता है।

इस विशेष अंश के अंतिम सत्र में, हम देखेंगे कि यीशु श्रोताओं को चुनौती देकर इस कथन को कैसे समाप्त करेंगे। हालाँकि एक व्यक्ति ने प्रश्न पूछा, लेकिन उनकी चुनौती श्रोताओं को दी

जाएगी, जिनके बारे में हम सोचते हैं कि शिष्य स्वयं भी उनमें से एक थे, कि वे उन्हें बताएं कि उन्हें इस महान कार्य में किस पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। तो चलिए अध्याय 12, श्लोक 13 से 15 को देखना शुरू करते हैं। मैंने यहाँ रूपरेखा पर जो सत्र रखा है, वह पहला सत्र है जहाँ विरासत की खोज यीशु को लालच के विषय पर बात करने के लिए लाती है, और मैंने लूका अध्याय 12, श्लोक 13 से 15 को पढ़ा।

भीड़ में से किसी ने उससे कहा, गुरु, मेरे भाई से कहो कि वह मेरे साथ विरासत का बंटवारा कर ले। लेकिन उसने उससे कहा, एक आदमी जिसने मुझे तुम्हारा न्यायी और मध्यस्थ नियुक्त किया है, उसने उनसे कहा, सावधान रहो और हर तरह के लालच से अपने आप को बचाए रखो क्योंकि किसी का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता। इसलिए इस प्रवचन में अंतिम पंक्ति पर ध्यान दें, ऐसा लगता है कि यह प्रश्न यीशु को यहाँ पूरे केंद्रीय सिद्धांत को संबोधित करने के लिए प्रेरित करने वाला है कि जीवन संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता है। इस मार्ग में जो कुछ चल रहा है वह उल्लेखनीय है।

सबसे पहले, जब आप पद 13 को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि वह व्यक्ति जिसका नाम नहीं बताया गया है, जो यीशु के पास आता है, उसे एक शिक्षक या रब्बी के रूप में संदर्भित करता है, यह सुझाव देते हुए कि यह व्यक्ति व्यवस्था के मामलों में यीशु के अधिकार को पहचानता है। इसके बाद का प्रश्न हमें यह भी सुझाव देता है कि जो व्यक्ति यह प्रश्न पूछ रहा है, वह मानता है कि यीशु व्यवस्था की आवश्यकताओं के बारे में एक अच्छा मध्यस्थ होगा और व्यवस्था को लागू करने में मदद करेगा। आप यीशु को एक शिक्षक के रूप में देखते हैं और जिसके पास निर्धारित कानूनों को लागू करने का अधिकार है, जैसा कि मैंने विरासत के संबंध में व्यवस्थाविवरण और संख्या में आपके लिए स्क्रीन पर रखा है, यीशु को यह सवाल पूछना शुरू करने वाला है, कोई मेरे पास क्यों आए और भौतिक संपत्ति के बारे में सवाल पूछे? इससे पहले, ल्यूक ने हमें बताया कि यीशु ने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताया कि राज्य के मामलों में, व्यक्ति को सावधान रहना होगा और सादगी के लिए तैयार रहना होगा।

राज्य का काम इस बात से संबंधित नहीं है, या इसकी आवश्यकता नहीं है या यह धन इकट्ठा करने की इस पूरी भौतिकवादी अवधारणा को प्रस्तुत नहीं करता है, ताकि आप खुद को इतना महत्वपूर्ण महसूस कर सकें। अब, सतही तौर पर, किसी को यह कहना चाहिए कि यह एक वैध प्रश्न है। वास्तव में, यदि माता-पिता का निधन हो गया है और भाइयों के पास संपत्ति है और कोई भाई के साथ अनुचित व्यवहार कर रहा है, तो उस व्यक्ति को यीशु के पास आने और यह कहने में क्या समस्या होनी चाहिए कि मैं एक अधिकारी को पहचानता हूँ जो कानून की व्याख्या करने में सक्षम है, और यह व्यक्ति मेरी मदद कर सकता है और इस तरह यीशु से कानून को लागू करने और भाई को सही काम करने के लिए कहने में मदद करने के लिए कह सकता है।

सतह पर, यह कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। खैर, समस्या यह है कि यीशु ने इससे परे देखा है। यीशु के जवाब से हमें ऐसा लगा कि वह इस सवाल से परे किसी ऐसे व्यक्ति को देखता है जिसे ज़रूरी नहीं कि कोई ज़रूरत हो, लेकिन जो शायद भाई के साथ कुछ हद तक समानता बनाने में दिलचस्पी रखता हो।

अगर ऐसा है, तो हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जिसके पास बहुत कुछ है लेकिन वह और चाहता है। यीशु के उत्तर को सकारात्मक रूप में नहीं पढ़ा जाना चाहिए। वास्तव में, जब यीशु ने कहा कि जिस व्यक्ति ने मुझे तुम्हारा न्यायाधीश या मध्यस्थ बनाया है, तो इसे अंग्रेजी में स्पष्ट रूप से नहीं पढ़ा जाना चाहिए, हालांकि, यह किसी ऐसे व्यक्ति की फटकार के रूप में है जो शिक्षक से वह करने के लिए कह रहा है जो वह समर्थन नहीं करता है।

परमेश्वर के नाम पर उसका प्राथमिक कार्य लोगों द्वारा धन और संपत्ति को आवंटित करने और पुनर्वितरित करने के इस पूरे सामान्य व्यवसाय में शामिल नहीं होना है। यीशु इस समानता के मामले के बारे में चिंतित है, और इसलिए यहाँ हम देखते हैं कि यीशु सीधे मुद्दे पर जाकर इस मुद्दे से निपटता है। यहाँ लूका के प्रवचन में ध्यान देने योग्य एक और बात यह है।

मैथ्यू की तरह लूका भी ईश्वर को पिता की काल्पनिक छवि में संदर्भित करेगा और कभी-कभी शिष्यों को लगभग भाइयों की भाषा में संदर्भित करेगा। यहाँ तक कि जब यीशु की माँ और भाई उसके पास आए, तो लूका हमें बताता है कि यीशु ने कहा कि जो मेरे सच्चे रिश्तेदार हैं, वे ही सच्चे शिष्य हैं। लेकिन यहाँ इस अंश में, आइए देखें कि लूका ने भाषा को कैसे व्यक्त किया है।

यीशु से पूछने वाला अनाम व्यक्ति भाई की ओर इशारा करता है। वह जिस व्यक्ति को बनाना चाहता है, चाहे वह भौतिक संपत्ति के मामले में ही क्यों न हो, वह भाई है। यीशु को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं होगी।

ऐसा इसलिए नहीं कि उसे प्राकृतिक रिश्तेदारी में कोई दिलचस्पी नहीं है। बेशक, उसे प्राकृतिक रिश्तेदारी में दिलचस्पी है। लेकिन उसे भौतिक संपत्ति के इस व्यवसाय में और लोगों को अधिक भौतिक संपत्ति प्राप्त करने में मदद करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

जैसा कि हम नीचे देखेंगे, उसके लिए यह जीवन में एक गलत लक्ष्य होगा। यदि कोई लक्ष्य है तो वह उससे कहीं बढ़कर होना चाहिए, अर्थात् परमेश्वर का राज्य। यह मुझे इस अंश के अगले भाग पर ले जाता है, जिसमें यीशु बातचीत को आगे बढ़ाएगा, यह जानते हुए कि श्रोता और शिष्य सुनेंगे और एक दृष्टांत देंगे।

जिसे हम धनवान मूर्ख का दृष्टान्त कहते हैं। और यह इस प्रकार है। फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, कि एक धनवान मनुष्य की भूमि में बहुत उपज हुई।

और उसने खुद से कहा, मुझे क्या करना चाहिए? क्योंकि मेरे पास अपनी फसल रखने के लिए कोई जगह नहीं है। और उसने कहा कि मैं यह करूँगा। मैं अपने बंधनों को तोड़ दूँगा और बड़े बंधन बनाऊँगा।

और वहीं मैं अपना सारा अनाज और अपनी सारी संपत्ति रखूँगा। प्रथम-पुरुष संदर्भ, मन और आँख पर ध्यान दें—श्लोक 19।

और मैं अपने प्राण से कहूँगा, हे प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत धन रखा है। चैन कर, खा, पी, आनन्द कर। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण और जो कुछ तू ने

इकट्टा किया है, वह किसका होगा? जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं, वह भी ऐसा ही है।

यहाँ, आप पाएँगे कि इस अनुच्छेद की शुरुआत क्या संदेश देना चाहती है। यदि वह व्यक्ति भौतिक सम्पत्ति में इतनी दिलचस्पी रखता है, तो यीशु यह कहना चाह रहे हैं कि, जीवन में अपनी प्राथमिकताओं को लेकर सावधान रहें। इसलिए यह दृष्टांत है।

मैं इस दृष्टांत से दो बातें उजागर करूँगा। सबसे पहले, मैं कुछ मुख्य अवलोकनों पर प्रकाश डालूँगा जो हमें इस विशिष्ट दृष्टांत से सीखना चाहिए। और फिर दूसरा, मैं कुछ सबक पर प्रकाश डालूँगा जो हमें इस दृष्टांत से सीखना चाहिए।

अब, आइए दृष्टांत में कुछ मुख्य बातों पर नज़र डालें। पाँच बातें। दृष्टांत में हमें यह एहसास होने लगता है कि अमीर ज़मींदार का नाम नहीं बताया गया है।

और यह अनाम धनी ज़मींदार भीड़ में से आया था। हम दृष्टांत से यह भी देखते हैं कि लूका इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि यीशु इस बात पर विशेष ध्यान दे रहा था कि यह ज़मीन थी जिसने बहुत सारी फ़सलें पैदा कीं। यह ज़मीन का मालिक नहीं था जिसने फ़सलें पैदा कीं।

यह कहना कि कृषि जगत में भूमि ने बहुत सारी फ़सलें पैदा कीं, इसका मतलब है कि भगवान ने बारिश की। भगवान ने भूमि को उपजाऊ बनाया। भगवान ने इस आदमी को भरपूर फ़सलें देने का आशीर्वाद दिया।

तो, अगर ज़मीन ने ये फ़सलें पैदा कीं, तो मुझ पर इतना ज़ोर, बार-बार ज़ोर क्यों? जब मैं अमेरिका आया, तो मैंने कुछ लोगों को यह कहते हुए सुना कि उन्होंने कुछ ऐसा कहा जो मुझे, मुझे और खुद को प्रभावित करता है या कुछ ऐसा जो मेरे द्वारा कहे जाने वाले मी-इज़म के दर्शन पर ज़ोर देता है। ऐसा लगता है कि यह आदमी उसी के अनुसार जी रहा था।

लेकिन लूका का दृष्टांत हमें यहाँ कुछ याद दिलाता है। नहीं, यह मनुष्य नहीं था जिसने फ़सलें पैदा कीं। यह भूमि थी जिसने फ़सलें पैदा कीं।

दूसरी बात जो हम यहाँ पाते हैं वह यह है कि यह वह व्यक्ति नहीं है जिसकी ज़मीन से पर्याप्त उपज नहीं हुई। अधिक पाने की उसकी लालसा बहुतायत से पैदा हुई थी। वास्तव में, यह तथ्य कि उसने अपनी ज़मीन से अधिक देखा है, यही कारण है कि वह अधिक चाहता है।

और इसलिए, उन्होंने यह कहते हुए लगभग रणनीतिक सोच अपनाई कि, हाँ, मेरे पास यहाँ पर्याप्त है। और क्योंकि मेरे पास पर्याप्त है, इसलिए मैं अब गणना करके कदम उठा रहा हूँ ताकि मैं अपनी उपज बढ़ाने और एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रावधान कर सकूँ। हम देखते हैं कि, दृष्टांत में भी, वह स्वयं पर जोर देते हुए उस अवलोकन को करना शुरू करता है।

जब वह अपने आप से परामर्श करेगा, तब वह कहेगा, मैं इसे स्वयं बनाऊँगा, और मैं बनों को तोड़ दूँगा, और मैं और अधिक निर्माण करूँगा, और मैं अधिक फ़सल प्राप्त करूँगा। अब, ध्यान

दें कि लूका हमें दृष्टांत में बताता है कि जब वह भविष्य में वृद्धि के बारे में बात कर रहा है, तो वह इसका श्रेय खुद को देता है। लेकिन दृष्टांत की शुरुआत में, यह भूमि थी जिसने उत्पादन किया।

तो, आप इस दृष्टांत और कथा में कुछ दिलचस्प गतिशीलता देखना शुरू करते हैं। आप इस आदमी को देखना शुरू करते हैं जो कहता है, यह सब मेरे बारे में है। मैं इसे नष्ट कर दूंगा।

और वह खुद की ओर मुड़ा और बोला, "तुम्हें पता है क्या? अब मैं कहूँगा कि मैं आराम कर सकता हूँ। मैं खा सकता हूँ। मैं पी सकता हूँ।"

मैं एक अच्छा जीवन जी सकता हूँ। यीशु ये दृष्टांत, यह विशेष दृष्टांत, भीड़ में से एक व्यक्ति के सवाल के जवाब में दे रहे हैं, जिसने कहा, गुरु, क्या आप मुझे मेरे हिस्से की संपत्ति, मेरे भाई से विरासत का हिस्सा दिलाने में मदद कर सकते हैं? यह संभव है कि यीशु पहले से ही जानते हों कि इस आदमी के पास पर्याप्त था। यह भी संभव है कि यीशु जानते हों कि जिस भीड़ से वे बात कर रहे थे, उसमें अनगिनत लोग होंगे जो एक ही आवेग में होंगे, कि जितना उनके पास है, उतना ही वे और अधिक चाहते हैं।

जितना ज़्यादा उनके पास होता है, उतना ही ज़्यादा आत्मविश्वास वे झूठी भविष्यवाणियों के आधार पर बनाते हैं। आत्मविश्वास की झूठी भावना जो कहती है, मेरे पास भविष्य की पकड़ है। मैं पता लगा लूँगा कि भविष्य कैसा होगा, और मैं भविष्य की दिशा निर्धारित करूँगा।

आप देखिए, यीशु यहाँ कुछ बात कह रहे हैं। परमेश्वर के राज्य में, ऐसा नहीं है कि आप लोगों को आपको धमकाने दें और जो आपका है उसका फ़ायदा उठाएँ। नहीं, यीशु का यह मतलब नहीं है।

यीशु जीवन में प्राथमिकता वाले मामलों पर बात करने जा रहे हैं। इस विशेष अंश से हम क्या सबक सीख सकते हैं? यहाँ, हमें कुछ दिलचस्प बातें मिलती हैं। सतही तौर पर, कोई सोच सकता है कि ज़मींदार एक रणनीतिक विचारक था जो पूर्वानुमान के बारे में जानता था और यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह भविष्य के लिए योजना बनाए।

दरअसल, एक व्यावसायिक घराने में पले-बढ़े होने के कारण, जब मैं यह पाठ पढ़ता हूँ, तो मैं सोचता हूँ, वाह, एक अच्छे व्यावसायिक विचारक को यही करना चाहिए। मेरे पास और भी है, और मैं भविष्य में और भी अधिक कमा सकता हूँ। इसलिए, मैंने परिस्थितियाँ तय कीं।

इसे प्रक्षेपण कहते हैं। यदि आप अपने प्रक्षेपण के लिए अच्छे प्रक्षेपण करने में सक्षम हैं और अपनी योजनाओं को अच्छी तरह से क्रियान्वित करते हैं, तो आप वास्तव में कम से कम आश्चर्य के साथ भविष्य में सुचारू रूप से आगे बढ़ पाएंगे। ओह, हाँ, यह अच्छी व्यावसायिक सोच है।

आप में से जिन्होंने मुझे विभिन्न मंचों पर नेतृत्व के बारे में बात करते हुए सुना है, वे जानते होंगे कि मैं इसी तरह व्यवहार करता हूँ। लेकिन आप देखिए, मैं खुद को, आप में से अधिकांश लोगों की तरह, पकड़ता हूँ कि जब हम उस सोच में पड़ जाते हैं, तो हम इस तरह की सोच की समस्या में

पड़ जाते हैं। यहाँ तक कि उन मामलों में भी जहाँ हमें ईश्वर और राज्य के सिद्धांतों पर पूर्ण निर्भरता रखनी होती है, किसी न किसी तरह, हम नियंत्रण रखते हैं।

भविष्य पर हमारा कितना नियंत्रण है? जीवन ने हममें से बहुतों को हैरान कर दिया है। कभी-कभी, यह किसी बड़े दावे के दो मिनट बाद होता है। कभी-कभी, यह किसी बड़े दावे के एक दिन बाद होता है।

हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन यीशु का कहना यह नहीं है। यीशु का कहना है कि राज्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। तो, यहाँ कुछ सबक क्या हैं? सबसे पहले, हम महसूस करते हैं कि यह व्यक्ति स्वयं पर ध्यान केंद्रित करता है, और स्वयं पर ध्यान केंद्रित करने से उन लोगों में यह उत्सुकता पैदा होती है, जो अधिक पाने की चाह रखते हैं।

लेकिन हम सभी को यह जानना चाहिए कि जब भी हम अपने ऊपर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो यह गलत धारणा है। मैं अभी दो दिन पहले ही किसी से बात कर रहा था और मैंने उस व्यक्ति को याद दिलाया कि जब भी हम अपने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम खुद को अलग-थलग कर लेते हैं और अकेले हो जाते हैं। और अगर हम समय नहीं निकालते हैं, तो हम अकेले हो जाते हैं।

खुद पर ध्यान केंद्रित करने से हम हमेशा प्रावधान के सच्चे स्रोत और जीवन के सच्चे अर्थ से अंधे हो जाएंगे। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि इस अमीर व्यक्ति की मूर्खता प्रक्षेपण के विवेक में नहीं बल्कि खुद पर और अपनी उपज के उपयोग पर ज़ोर देने में है। हम इस दृष्टांत से सीखते हैं कि मूर्ख लोग धन की प्रचुरता में संतुष्टि चाहते हैं।

जैसा कि आपको याद होगा, इस अनुच्छेद के आरंभिक चरणों में, जब मैंने इसे पढ़ा, यीशु ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि जीवन में बहुत सारी संपत्ति नहीं है। जो यह प्रश्न पूछने आया, उसे वह दिया गया। उसके बाद, हम इस दृष्टांत को पढ़ते हैं।

यीशु का कहना है कि यह सोचना वास्तव में मूर्खता है कि अगर हमारे पास ज़्यादा हो तो हम संतुष्ट हो जाएँगे। हमारे पास सच्चा जीवन होगा। ऐसा नहीं है।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो अमीर और दुखी हैं। आप देखिए, यीशु इस दृष्टांत में इस तथ्य पर जोर देने जा रहे हैं कि सच्चे शिष्य परमेश्वर में खजाने खोजने के लिए खुद से परे देखते हैं। परमेश्वर में खजाने ही सच्ची संपत्ति हैं जिन्हें हासिल करने का लक्ष्य होना चाहिए।

एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो प्राचीन दार्शनिकों का शौकीन है और दार्शनिकों के कार्यों को पढ़ने और उनके कार्यों की तुलना पॉल से करने की कोशिश करता है, मैं इस दृष्टांत के माध्यम से प्लूटार्क और डियो क्राइसोस्टोम जैसे किसी व्यक्ति के कार्यों को देखने से खुद को रोक नहीं सका। प्लूटार्क के मामले में, प्लूटार्क लोभ या लालच के बारे में बात करता है; वह कहता है, उनसे मांगो जो कुछ भी खर्च नहीं करते हैं, हालांकि उनके पास बहुत कुछ है, और फिर भी वे हमेशा अधिक की लालसा रखते हैं। वे अभी भी अपनी मूर्खता पर हमारे आश्चर्य को बढ़ा सकते हैं।

क्योंकि उसकी परेशानी गरीबी और अभाव नहीं है, बल्कि धन की अतृप्त इच्छा और प्यास है, जो चीजों के बारे में एक भ्रष्ट और विचारहीन निर्णय से उत्पन्न होती है, जिसे अगर लोगों के दिमाग से एक टिन की तरह नहीं निकाला जाता है जो उन्हें सिकोड़ता है, तो वे हमेशा अतिरिक्त चीजों की चाह में रहेंगे, यानी उन चीजों की लालसा करेंगे जिनकी उन्हें कोई जरूरत नहीं है। प्लूटार्क का मुद्दा लगभग यीशु के मुद्दे से मेल खाता है। वैसे, प्लूटार्क पॉल के समकालीन थे।

उनका कहना है कि जो लोग लालची होते हैं और अधिक पाने की लालसा से प्रेरित होते हैं, वे आम तौर पर ऐसा इसलिए नहीं करते क्योंकि वे चाहते हैं बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि अधिक पाने की अतृप्त इच्छा होती है, भले ही किसी को अधिक की आवश्यकता न हो। वे कहते हैं कि यह मूर्खता है। यीशु के शब्दों में, यही वह काम है जो अमीर ज़मींदार कर रहा है, और यही बात उसे मूर्ख अमीर ज़मींदार बनाती है।

एक और दार्शनिक जो लालच के बारे में बात करता है और मुझे बहुत पसंद है, वह है डियो क्रिसोस्टोम, जिसने लालच पर एक ग्रंथ लिखा है। डियो ने अपने प्रवचन 17 से सिर्फ़ दो पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए इसे इस तरह से कहा है। उन्होंने कहा, मैं लालच के बारे में भी यही मानता हूँ कि सभी लोग जानते हैं कि यह सबसे बड़ी बुराइयों का कारण न तो उचित है और न ही सम्मानजनक है, और यह कि सभी चीज़ों के बावजूद, कोई भी व्यक्ति इससे दूर नहीं रहता या अपने पड़ोसी के साथ संपत्ति में समानता रखने को तैयार नहीं होता।

लेकिन, कुछ पंक्तियों में, लालच न केवल एक व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी बुराई है, बल्कि यह उसके पड़ोसियों को भी नुकसान पहुँचाता है। और इसलिए, कोई भी लालची व्यक्ति पर दया नहीं करता; सभी उसे निर्देश देने की परवाह करते हैं, लेकिन सभी लालची व्यक्ति से दूर रहते हैं और उसे अपना दुश्मन मानते हैं। यीशु ने उस व्यक्ति की ओर इशारा किया जो चाहता है कि वह उनकी विरासत को विभाजित करे, दृष्टांत में इस ज्वलंत चित्रण के साथ, दृष्टांत के उस सत्र में उस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है जिसमें कहा गया है, लेकिन भगवान ने उससे कहा, अर्थात्, धनी ज़मींदार, मूर्ख, आज रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया जाएगा, और जो कुछ तूने तैयार किया है, वह किसका होगा? उत्तर है, यह तुम्हारा नहीं होगा।

और फिर, श्लोक 21, ऐसा ही वह है जो अपने लिए खजाना रखता है, और परमेश्वर के प्रति धनी नहीं है। संपत्ति और प्रावधानों पर यीशु ने तुरंत जारी रखा और श्लोक 22 से समझाया, और उन्होंने अपने शिष्यों से कहा। इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन के बारे में चिंतित मत हो, लगभग अब एक सेग्यू की तरह। यदि आप इस संपत्ति और उस सब के बारे में बात कर रहे हैं, तो मुझे आपको बताना चाहिए कि आपको वास्तव में किस तरह की संपत्ति की आवश्यकता है। फिर वह मैथ्यू 7 पर्वत पर, अध्याय 6 में मैथ्यू द्वारा दर्ज की गई बातों को दोहराता है। इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ, उसने कहा, अपने जीवन के बारे में चिंतित मत हो, कि तुम क्या खाओगे, न ही अपने शरीर के बारे में, कि तुम क्या पहनोगे, क्योंकि जीवन भोजन से बढ़कर है, और शरीर वस्त्र से बढ़कर है।

फिर, यीशु प्रकृति से अवलोकन का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करेंगे कि वह उन लोगों के लिए परमेश्वर की क्षमता को दर्शाएँ जिनकी वे बहुत अधिक परवाह नहीं करते हैं। प्रकृति से

पहला अवलोकन कौवों का है। वह कहते हैं, कौवों पर विचार करें, वे न तो बोते हैं, न ही काटते हैं, उनके पास न तो गोदाम है और न ही खलिहान, अमीर युवा शासक, मूर्ख भूमि मालिक की तरह, और फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है, तुम पक्षियों की तुलना में कितने अधिक मूल्यवान हो, और तुम में से कौन चिंता करके अपने जीवन की अवधि में एक घंटा भी जोड़ सकता है, यदि तुम इतनी छोटी सी बात भी नहीं कर सकते, तो तुम बाकी के बारे में क्यों चिंतित हो? लूका दूसरा अवलोकन करता है: यदि कौवे जो इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं, परमेश्वर उनकी देखभाल करता है, और तुम नहीं सोचते कि तुम परमेश्वर की अच्छी देखभाल करने के लिए अधिक मूल्यवान हो, और इसलिए तुम जो नियंत्रित नहीं कर सकते उसे नियंत्रित करने की कोशिश करने के बारे में चिंतित हो, तो प्रकृति से अवलोकन भी यहाँ सामने आता है, और वह फूलों, लिली से अवलोकन है।

जैसा कि आप स्क्रीन पर देख सकते हैं, मैंने आपको अलग-अलग तरह की लिली दी हैं। पक्षियों की तरह, वे भी बहुत अच्छी लगती हैं। और यही बात यीशु ने पद 27 में कही है।

सोसन के फूलों पर ध्यान दो, वे कैसे उगते हैं। वे न तो मेहनत करते हैं, न ही काटते हैं। फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ, सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में, उनमें से किसी एक के समान भी वस्त्र नहीं पहन सका।

लेकिन अगर परमेश्वर घास को, जो आज खेत में जीवित है, और कल भट्टी में झोंक दी जाएगी, ऐसा पहनाता है, तो वह तुम्हें, या तुम जो कम विश्वास वाले हो, कितना अधिक पहनाएगा? मैथ्यू के विवरण में, हम यीशु को मैथ्यू 6 से शुरू करते हुए, श्लोक 24 से 34 तक, चिंता की शर्तों को बार-बार दोहराते हुए और इन दृष्टांतों का उपयोग करते हुए देखते हैं। कौवे इतने महत्वपूर्ण पक्षी नहीं हैं। और जंगली लिली इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जिसके लिए आप बहुत सारे डॉलर खर्च करना चाहते हैं।

जब मैं फूल खरीदने के लिए दुकान पर जाता हूँ, तो मैं कुछ खूबसूरत फूलों की तलाश करता हूँ, और कभी-कभी वे खेत से आते हैं। किसी ने बहुत समय बिताया है। लेकिन जंगली फूल, ज़मींदार के खेत की तरह, ज़मीन उन्हें पैदा करती है।

आप देखिए, पक्षी रहस्यमय हैं, लेकिन उन्हें खाना मिलता है। दूसरे शब्दों में, भगवान उन्हें खाना खिलाते हैं। और यीशु ने कहा, देखो, प्रकृति से सबक आपको यह सिखाना चाहिए कि सृष्टि का भगवान अपने प्राणियों का ख्याल रखता है।

उस पर भरोसा करें। इसलिए सवाल यह है कि आप कम विश्वास वाले हैं। इन उपमाओं पर तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं।

एक, यहाँ यीशु का कहना है कि संपत्ति को बाँटने के विचार के जवाब में, लोग सोच रहे होंगे, प्रश्न करने वाले व्यक्ति के अलावा श्रोताओं में मौजूद लोग शायद इस बारे में सोच रहे होंगे कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है, और इसलिए जीवन के बारे में चिंतित हो सकते हैं। मैथ्यू के पर्वत पर उपदेश पर मेरी वास्तविक कक्षा चर्चा में, मैं स्क्रीन पर एक चार्ट लगाना पसंद करता हूँ जो

दिखाता है कि जिन चीज़ों के बारे में हम चिंतित हैं उनमें से केवल 8% ही वास्तव में ऐसी चीज़ें हैं जो हमारी चिंता के योग्य हैं। और 8% में से, 4% पर हमारा नियंत्रण है, और 4% पर हमारा थोड़ा नियंत्रण है।

तो, कल्पना कीजिए कि जिन चीज़ों को लेकर हम चिंतित हैं, उनमें से 92% चीज़ें पूरी तरह से झूठी हैं। हम उन्हें अपनी कल्पना में बनाते हैं। हम खुद को ही परेशान कर लेते हैं।

हम बहुत पसीना बहाते हैं। हम खुद से कहते हैं कि हम उन चीज़ों पर नियंत्रण रखते हैं जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं है। और फिर हम चलते हैं, चलते हैं, चलते हैं, चलते हैं, चलते हैं, चलते हैं।

हम खुद को खराब कर लेते हैं। कभी-कभी यह हमारे आस-पास की बहुत सी चीज़ों को नष्ट कर देता है। हम नियमित जीवन और जीवन की स्थितियों से विचलित हो जाते हैं।

मैं नहीं चाहता कि आप अपने घर के बारे में सोचें। मैं नहीं चाहता कि आप अपने वैवाहिक जीवन में अपने बच्चों के साथ क्या हो रहा है, आज आपको किन चीज़ों से डर लग रहा है, स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में सोचें। मैं नहीं चाहता कि आप एक मिनट के लिए भी इसके बारे में सोचें।

मैं चाहता हूँ कि आप सीधे यीशु की बात पर जाएँ। यीशु ने कहा, चिंता मत करो। एक शिष्य के रूप में जीवन के बारे में, जीने के बारे में, जीना एक ऐसी चीज़ है जिस पर आपका और मेरा नियंत्रण नहीं है।

हम कभी भी गिर सकते हैं। मैं ऐसी परिस्थितियों में जी चुका हूँ। एक पादरी के रूप में, मैंने किशोरों को दफनाया है।

और मैंने 20 की उम्र के लोगों को दफनाया है। और मैंने थोड़े ज़्यादा उम्र के लोगों को भी दफनाया है। लोगों की ज़िंदगी को छोटा करने वाली परिस्थितियाँ और स्थितियाँ अलग-अलग होती हैं।

हमारा जीवन पर नियंत्रण नहीं है। यीशु कहते हैं, शिष्य होने के नाते जीवन के बारे में चिंता मत करो। परमेश्वर का जीवन पर नियंत्रण है।

आप देखिए, मूर्ख ज़मींदार ने सोचा कि जीवन पर उसका नियंत्रण है। वह कहता है, मैं इसे व्यवस्थित करूँगा, और मैं व्यवस्थित करूँगा, और मैं और अधिक इकट्ठा करूँगा। और फिर जब मैं और अधिक इकट्ठा कर लूँगा, तो मैं बैठ जाऊँगा और कहूँगा, मैं आराम करने जा रहा हूँ।

मैं आराम करने जा रहा हूँ। मैं बहुत अच्छा समय बिताने जा रहा हूँ। रुको।

भविष्य आपके हाथ में नहीं है। यीशु ने कहा, इस बात की भी चिंता मत करो कि तुम क्या खाते हो या क्या पहनते हो। दुनिया के कुछ हिस्सों में, यह सच है जैसा कि प्राचीन दुनिया में था, कि लोग रोज़ाना क्या खाते हैं, यह एक चुनौती थी।

लोग खुद को गर्म रखने और अपने नग्न शरीर को ढकने के लिए क्या पहनते हैं, यह जानना आसान नहीं था। जिस दुनिया से हम अब अमेरिका में रिकॉर्ड कर रहे हैं, हमारी समस्या यह है कि हम इस बात की चिंता करते हैं कि क्या पहनें, इसलिए नहीं कि हमारे पास पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसलिए कि हमारे पास बहुत सारे विकल्प हैं। हम इस बात की चिंता करते हैं कि क्या खाएं, इसलिए नहीं कि हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है, बल्कि इसलिए कि हमारे पास खाने के लिए बहुत कुछ है।

और हम देख रहे हैं कि जब हमारे पास खाने के लिए बहुत ज़्यादा होता है और हम उसके बारे में चिंता करते हैं, तो वे हमें उसी स्तर पर नष्ट कर देते हैं, जिस स्तर पर वे लोग नष्ट करते हैं जिनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है और वे उसके बारे में चिंता करते हैं। इसलिए हमारी चिंता का पैमाना भी वही हो सकता है। यीशु ने कहा, इसके बारे में चिंता मत करो।

आप जानते हैं, मुझे लगता है कि यह लगभग डेढ़ साल पहले की बात है, मैंने ब्राज़ील में सीखे गए सबसे महत्वपूर्ण शब्दों में से एक सीखा, और यह शब्द है *tranquilo*। मुझे यह शब्द पसंद है। मुझे *tranquilo* की लैटिन ध्वनि पसंद है।

जब एक ब्राज़ीलियन कहना चाहता है, आराम करो, आराम करो, चिंता मत करो। यदि आप यीशु के शिष्य हैं, तो वह कहता है, ईश्वर पर भरोसा करो। प्रकृति में ईश्वर कैसे काम करता है, इसका अवलोकन एक प्रमुख महत्वपूर्ण बिंदु है जिसे यीशु यहाँ प्रस्तुत करना चाहते हैं, कि पक्षी, जीवित प्राणी जिन्हें जीवित रहने के लिए पोषण की आवश्यकता होती है, पक्षी जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़ने की आवश्यकता होती है, पक्षी जिन्हें मनुष्य देखते हैं और प्रशंसा करते हैं, पक्षी जिनकी आवाज़ और गायन मनुष्य सुन सकते हैं और आनंद ले सकते हैं, वे वही करने के लिए आते हैं जो हम उनसे उम्मीद करते हैं या जिसकी हम उनसे अपेक्षा करते हैं, इसलिए नहीं कि हम उनका बहुत ख्याल रखते हैं, बल्कि इसलिए कि कोई उनका ख्याल रखता है।

प्रकृति उनका ख्याल रखती है। उस दृष्टांत में निहित है ईश्वर, जो उनका ख्याल रखता है। उसी तरह, प्रकृति से अवलोकन भी हमें याद दिलाता है कि ईश्वर फूलों का भी ख्याल रखता है।

इसी कारण से, यीशु कह सके, परमेश्वर पर भरोसा रखो। परमेश्वर पर भरोसा रखो। और इस विशेष सत्र में अपने अंतिम बिंदु में, आप यीशु को अध्याय 12 की आयत 29 में यह कहते हुए पाते हैं कि तुम यह मत सोचो कि तुम्हें क्या खाना है या क्या पीना है, और न ही चिंता करो।

सभी राष्ट्रों के लिए, उस शब्द का अनुवाद राष्ट्रों के लिए किया जा सकता है, जो अन्यजातियों का अनुवाद कर सकता है, दुनिया के सभी राष्ट्र इन चीजों की तलाश करते हैं। और तुम्हारे पिता, रिश्तेदारी की भाषा पर ध्यान दो, तुम्हारे पिता जानते हैं कि तुम्हें उनकी ज़रूरत है। इसके बजाय, तुम्हें यही खोजना चाहिए: उसके राज्य की तलाश करो, और ये चीज़ें तुम्हें मिल जाएँगी।

और फिर, चिंता के बजाय, अब चिंता के लिए शब्द मरीम चिंता के लिए शब्द है, डर के लिए शब्द, चिंता के लिए शब्द। चिंता करने और डर में जीने के बजाय, वह अब कहता है, डरो मत, छोटे झुंड, क्योंकि तुम्हारे पिता को तुम्हें राज्य देने की इच्छा है। यीशु श्रोताओं को याद दिलाता है

कि परमेश्वर द्वारा प्रदान की जाने वाली संपत्ति और खजाने के मामलों में सच्चे शिष्यत्व की क्या आवश्यकता है।

ईश्वर ही वह है जो वह सब कुछ प्रदान कर सकता है जो स्थायी है, जो जीवन में सच्चा अर्थ लाता है। वह वही है जिसे आप खोजते हैं, वह ईश्वर जो पक्षियों और फूलों सहित हर चीज़ की देखभाल करने में सक्षम है। यदि यह वह ईश्वर है जिस पर हमने विश्वास किया है और हमने वास्तव में उस ईश्वर पर अपना भरोसा रखा है, तो यीशु दर्शकों को याद दिलाते हैं कि ये वे चीज़ें हैं जिन्हें अन्यजाति लोग चाहते हैं, वे इस बात की चिंता करते हैं कि क्या खाएं और क्या पिएं और अन्य सभी चीज़ें क्योंकि उनके पास ऐसा कोई ईश्वर नहीं है जो सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान हो, जो सब कुछ प्रदान करने में सक्षम हो और ऐसा स्थान हो जहाँ वे भविष्य में अपने विश्वास को सौंप सकें।

हालाँकि, मैथ्यू के विपरीत, जब यीशु इस बारे में बात करते हैं कि क्या खोजना है और क्या करना है, तो वे कहते हैं कि राज्य की तलाश करो। मैथ्यू 6 में, मैथ्यू के वृत्तांत में, मैथ्यू 7 में पहाड़ पर, मैथ्यू इसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश के रूप में प्रस्तुत करता है। यहाँ, वह कहता है, राज्य की तलाश करो।

लेकिन हम यहाँ जो हो रहा है उसे लेकर भ्रमित न हों, लूका वास्तव में यह भी कह रहा है कि राज्य परमेश्वर का शासन है। परमेश्वर का शासन परमेश्वर का शासन है। परमेश्वर का शासन तब आता है जब लोग परमेश्वर को अपने स्थान और अपनी परिस्थिति में आमंत्रित करते हैं, और इसके लिए परिस्थिति पर नियंत्रण पाना पड़ता है।

और अगर परमेश्वर परिस्थिति पर नियंत्रण कर लेता है, तो वह लोगों और परिस्थितियों के लिए ज़रूरी चीज़ें मुहैया कराता है। आप देखिए, राज्य की तलाश करें, और वह कहता है कि अगर आप परमेश्वर के शासन की तलाश करेंगे, तो ये सभी चीज़ें आपको मिल जाएँगी। जिन चीज़ों के बारे में आप चिंतित हैं, भौतिक संपत्ति, वे चीज़ें जिन्हें आप खाना-पीना चाहते हैं, वे चीज़ें जो विरासत के वितरण के बारे में किसी को परेशान करेंगी, वे सभी, संपत्ति और सामान, वे आपको दिए जाएँगे।

लेकिन फिर यहाँ यीशु का देहाती हृदय प्रकट होता है। वह भीड़ की ओर मुड़ता है और कहता है कि डरो मत। छोटा झुंड अभिव्यक्ति अपनी भेड़ों के लिए एक कोमल चरवाहे की छवि को दर्शाती है।

डरो मत, मेरे छोटे झुंड। कृपया, क्या तुम समझते हो? क्या तुम समझते हो कि यह तुम्हारे पिता की अच्छी इच्छा है, कि तुम्हारे पिता तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करने में प्रसन्न हैं? आपको बस इतना ही चाहिए कि तुम उनके प्रावधान के लिए उन पर भरोसा करो। आप देखिए, जब यीशु ने यह शिक्षा दी, तो यीशु एक ऐसे बिंदु पर पहुँचे जो मुझे लगता है कि संपत्ति और प्रावधानों पर इस चर्चा को समाप्त करने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है।

मामले का सार, अध्याय 12 का 33, 34. अपनी संपत्ति बेचो। अगर कोई संपत्ति में हिस्सा चाहता है, तो वह मना कर देता है।

इसके विपरीत, जाओ और अपनी संपत्ति बेच दो। जरूरतमंदों को दे दो। खलिहान मत बनाओ।

भण्डार घर मत बनाओ। अपने पास ऐसा धन इकट्ठा करो जो पुराना न हो, और स्वर्ग में ऐसा खजाना इकट्ठा करो जो कभी खत्म न हो, और जिसके पास चोर न जाए, और कीड़ा न बिगाड़े। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

यीशु लालच की जगह उदारता की आवश्यकता पर बल देते हैं। लेने की बजाय, लेने की बजाय, प्राप्त करने की बजाय, जो आपके पास है उसे दे दीजिए।

वह आगे यह भी कहते हैं कि, बेच दो, छोड़ दो, अपनी सारी संपत्ति छोड़ दो और जो तुम्हारे पास है उसे दे दो। दूसरों की मदद करो। क्योंकि चुनौती यही है।

वह खोजो जिसका शाश्वत मूल्य है क्योंकि जिस परमेश्वर के हाथों में तुम्हारा भविष्य है, वही परमेश्वर तुम्हारी सभी ज़रूरतों को पूरा करने में भी सक्षम है। और मैं इस सत्र का समापन ल्यूक के सुसमाचार पर अपनी टिप्पणी में जोएल ग्रीन के एक उद्धरण के साथ करता हूँ जो मुझे लगता है कि यहाँ केंद्रीय मुद्दे को सारांशित करता है।

ग्रीन लिखते हैं, "इसलिए, राज्य की तलाश करना राज्य पर अपना दिल लगाने के बराबर है। जीवन के इस उन्मुखीकरण का परिणाम यह है कि यह एक स्वर्गीय खजाना है जो न तो सांसारिक अस्तित्व की अनिवार्यताओं के अधीन है और न ही ईश्वर के अप्रत्याशित हस्तक्षेप से खतरे में है। जब आप ये व्याख्यान सुनते हैं, तो मुझे नहीं पता कि आप संपत्ति के साथ अपने रिश्ते में कहां हैं।

लेकिन मैं आपको लूका में यीशु द्वारा बताई गई राज्य प्राथमिकताओं को समझने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। साथ ही, अपने दिमाग में यह बात भी रखें कि मैंने पहले उल्लेख किया था कि लूका समाज के एक कुलीन व्यक्ति को लिखता है, जिसे वह सेठ थियोफिलस के नाम से संदर्भित करता है। वह थियोफिलस को याद दिलाता है कि स्थिति और संपत्ति क्या हो सकती है क्योंकि थियोफिलस यीशु के साथ इन सभी मुठभेड़ों और कई लोगों को यीशु की शिक्षाओं के बारे में पढ़ता है।

अगर मैं आज इन शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करूँ, तो मैं आपसे पूछना चाहूँगा कि संपत्ति के मामले में आपकी प्राथमिकताएँ कहां हैं। चीज़ों के लिए आपकी इच्छा और प्रयास। क्या आप वाकई ईश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह आपकी देखभाल करेगा? मैं एक छोटे से शहर में पला-बढ़ा हूँ, जिसे मैं गाँव कहना पसंद करता हूँ, घाना के एक नए जिले के उत्तरी भाग में कटंगा में, जिसे अब ओटी क्षेत्र कहा जाता है।

मुझे एक ऐसे घर में बड़ा होने का सौभाग्य मिला, जो 99% लोगों से कहीं बेहतर था। लेकिन मुझे यह देखकर भी गर्व हुआ कि एक पूरा परिवार जो प्रतिदिन 1 डॉलर से भी कम पर जीवन यापन कर रहा है, वह कैसे जी सकता है। मैं अपने सहपाठियों को, खासकर प्राथमिक विद्यालय में, देख पाया, जिनमें से कुछ नंगे पैर स्कूल आते हैं।

और फिर भी, उनके पास खुशी है। और फिर भी, उनके पास पूर्णता की भावना है। और मुझे उन जगहों पर यात्रा करने और रहने का सौभाग्य मिला है जहाँ अर्थव्यवस्था बेहतर है और लोग बहुत बेहतर परिस्थितियों में रहते हैं।

मुझे एहसास हुआ है कि भौतिक संपत्ति मायने रखती है, लेकिन वे एक समृद्ध जीवन के बराबर नहीं हैं। भीड़ में से आदमी का सवाल है कि यीशु कानून को लागू करने में मदद करें ताकि वह विरासत का अपना हिस्सा पा सके। यीशु ने लालच देखा, यही सबटेक्स्ट है, और एक दृष्टांत दिया और बाद में इस बात पर जोर दिया कि लोगों को किस बारे में चिंतित होना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, लोगों को क्या खोजना चाहिए। वह आपको और मुझे अपने राज्य, अपने शासन की तलाश करने के लिए बुलाता है। क्योंकि अगर हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर, जो प्रकृति, पक्षियों और फूलों की ज़रूरतों को पूरा करता है, हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा।

वह हमें अपने साथ आने के लिए आमंत्रित करता है। हम महसूस करते हैं कि अगर हम अपने दिल को सही जगह पर लगा सकें और परमेश्वर के खजाने की तलाश कर सकें, तो यह एक ऐसा खजाना होगा जो हमेशा के लिए रहेगा। यह वह खजाना है जो जीवन में पूर्णता प्रदान करेगा।

भगवान आपको आशीर्वाद दें और आपकी रक्षा करें। भगवान आपको पुनः ऊर्जा प्रदान करें और आपको और मुझे उसे और अधिक जानने की इच्छा दें और ऐसे वफादार अनुयायी बनें जो लालच को हमें उस सच्चे जीवन से वंचित न करने दें जो वह प्रदान करता है। सुनने के लिए धन्यवाद, और भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 20 है, संपत्ति और प्रावधान, लूका 12:13-34।